राजस्थान की लोक संस्कृति व इसकी सामाजिक प्रासंगिकताः

*मीनाक्षी माथुर

सारांशः

- विविधता को समेटे हुए राजस्थान राज्य का नाम स्वयं एक सांस्कृतिक एकता का सूचक है जो कई युगों से गौरवशाली भारतीय परंपरा का हिस्सा है।
- प्राचीन काल मध्यकाल में इस प्रदेश के लिए कोई एक नाम प्रचलित नही था, अनेक समृद्ध इकाइयां इसका अंग थी जो अपना स्वतंत्र अस्तित्व नाम रखती थी जिनमें अन्तर्वेद सौवीर, मरुकान्तर, लाट , गुर्जर, सपादलक्ष, जांगल, विराट आदि प्रमुख थे। बाद में अंग्रेजों ने प्रशासनिक सुविधाओं और राजनीतिक स्वार्थों के चलते इन क्षेत्रों का तत्कालीन राजपूत राज्यों में विलय कर दिया और इस सम्पूर्ण मरुस्थलीय क्षेत्र को राजपुताना नाम दिया। डॉ गोपीनाथ शर्मा के अनुसार ''स्वतंत्रता के बाद विलय प्रक्रिया के अंतर्गत इसका नामकरण, हर्षकालीन शासकीय व्यवस्था के आधार पर ''राजस्थान'' कर दिया गया।
- राजस्थान की संस्कृति अपनी भव्यता, विविधता, समरसता के कारण विश्व की अनूठी संस्कृतियों में जानी जाती है। सहजता और सामंजस्य इसकी मूल विशेषता है। यहां की लोक संस्कृति यहाँ के लोक जीवन में बहुत गहराई तक अपनी जड़ें फैलाए है और आमजीवन की धड़कन है। समाज व परिवार में लोक परम्पराएं, रीति–रिवाज पीढ़ी दर पीढ़ी निरन्तर सहर्ष अपनाई जाती रही हैं।
- राजस्थान अपने आप में एक ऐसा प्रदेश है जिसकी लोक संस्कृति व परम्पराएं भी पर्यटन का विशेष आकर्षण केन्द्र रही है यही कारण है कि यहां की लोक संस्कृति आर्थिक आजीविका का भी सरल मुख्य स्रोत है।
- यहाँ के लोक गीत, नृत्य, तीज–त्यौहार अब व्यवसायिक रूप लेते जा रहे हैं और इसलिए सामाजिक जीवन को तेजी से प्रभावित कर रहे हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन, संस्थाओं व संस्कृतियों से जुड़ने के साथ ही राजस्थानी संस्कृति में भी फ्यूजन के रूप में एक बड़ा परिवर्तन आया है। गाँव, ढाणी, चौपाल, कस्बे अब अपना मूल रूप छोड़कर मिली जुली संस्कृति अपनाने लगे हैं इसलिए नई मानसिकता के साथ फिर से लोक संस्कृति के अध्ययन की आवश्यकता है जो इसका सामाजिक व धार्मिक जुड़ाव बनाये रख सकें।
- बदलते परिवेश में इन बातों पर प्रकाश डालने अति आवश्यक है कि यहाँ की भक्ति धारा ने समाज को एक सूत्र में बांधकर रखा, यहाँ भक्ति की सगुण और निर्गुण दोनों ही शाखाओं का भली भांति विकास हुआ है जिसने गंगा जमूनी तहज़ीब के विकास में अपना विशेष योगदान दिया है।
- आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन की दृष्टि से भी यहाँ की लोक संस्कृति, कलाओं व परम्पराओं में अनेक विकल्प विद्यमान है जिनके विस्तार पर ध्यान देने का ये सबसे सही समय हैं इससे न केवल ग्रासरूट स्तर पर

विकास होगा अपितु पलायनवादी प्रवर्तियों पर भी अंकुश लगेगा। राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर समन्वय व एकता की प्रतीक हैं। उपयोगी कला और ललित कलाओं तथा जीवनशैली में काम में आने वाली प्रत्येक वस्तु में विभिन्न जातियों व उनकी संस्कृतियों की छाप आश्चर्यजनक रूप से देखने को मिलती हैं।

- अब विचारणीय तथ्य ये हैं कि ये प्राचीन वैभवशाली सांस्कृतिक धरोहरें संग्रहालय और पर्यटन की वस्तु मात्र बनकर रह गई हैं और अपनी सामाजिक प्रासंगिकता खोती जा रही है जिन्हें पुनः स्थापित करना नितांत आवश्यक है।

संकेताक्षरः

- लोक–जीवनशैली, रीति–रिवाज, सांस्कृतिक–धरोहर, लोक–संगीत व कला, आत्मनिर्भरता।

प्रस्तावनाः

- सांस्कृति किसी भी राष्ट्र, राज्य या समाज की विशेष पहचान होती है जो उसकी आत्मा या जनजीवन को दर्शाती हैं। संस्कृति एक बहती नदी के समान होती है। जिसमें न जाने कितनी धाराएँ कब, कहाँ, कैसे आकर मिलती जाती हैं और संस्कृति नित नए परिवर्तनों के साथ फलती फूलती जाती है। संस्कृति के संदर्भ में चर्चा करने से पूर्व आवश्यक है कि हम इसका सही अर्थ समझें।
- संस्कृति के दो पक्ष होते हैं : आंतरिक व बाह्य। आंतरिक पक्ष में उस संस्कृति से संबंधित जनजीवन के भीतरी चारित्रिक गुणों का समावेश किया जाता है और बाह्य पक्ष में दृश्य व श्रव्य कलाएं और शिल्प को रखा जाता है।
- अब हम बात करते है भारतीय संस्कृति की जो अपनी प्राचीन परम्पराओं व विधि संस्कृतियों के समागम व अनेक कलात्मक अवदानों के लिये विश्व पटल पर अपनी विशेष पहचान रखती है।
- भारतीय संस्कृति की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि जो अपनी प्राचीन परम्पराओं व विविध संस्कृतियों के समागम व अनेक कलात्मक अवदानों के लिये विश्व पटल पर अपनी विशेष पहचान रखती है।
- भारतीय संस्कृति की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि इसकी सामंजस्य करने की शक्ति बहुत बलवती है जिसने अनेक आक्रामक जातियों को स्वयं में रचा बसा लिया जैसे शंक, हूण, यंक्ष, कुषाण, गंधर्व, यूनानी, किन्नर, मंगोल, यवन आदि। अनेक धर्मों, भाषाओं, बोलियों, जातियों व प्रदेशों में बंटा फिर भी एकता के सूत्र में बंधा भारत, विविधता में एकता को दर्शाता है और यही इसकी मूल जीवन शैली है।
- राजस्थानी संस्कृति का वैभव भी कम अनूठा नहीं है, 'पूनम का चाँद जब अपनी सम्पूर्ण आभा लिए होता है तब होले से धरा पर उतरती हैं उसकी श्वेत शीतल किरणें और समा आती हैं रेतीले धौरों में, जगमगा उठती हैं दूर तक फैले रेगिस्तान की रातें और उतार देती हैं तपते दिन की लू के थपेड़ों से घायल थकान
- और अगलते ही दिन तड़के जब सूरज की लालिमा बिखर जाती हैं इन धौरों पर तो चमक उठता है इनका कण कण।'' जी हाँ हम राजस्थान की ही बात कर रहे है,
- शूरवीरों और वीरांगनाओं, त्यागमयी ललनाओं की गौरव गाथाओं से भरा राजस्थान, त्याग, प्रेम, सौंदर्य, साहस से परिपूर्ण वीरभूमि राजस्थान, पारम्परिक रंगीले परिधानों में सजी तीज, गणगौर पूजती

- घूंघट में इठलाती महिलाओं, पनिहारिनों, फाग बधावे गाती, घूमर खेलती, बंधेज, मोठड़े की चुनर, लहरिया लहराती नखराली नारों का राजस्थान, केसिरया पाग में मूछों को ताव देते, धोती, अंगरखा पहने गठीले पुरूषों का, एकतारा, अलगोजा बजाते, ढोल चंग पर स्वांग गीदड़ खेलते छबीले पुरूष का
- नट–नटनियों, बंजारों का राजस्थान, भेड़ बकरियों को हांकते, ऊंटों के काफिले दौड़ाते गठीले मर्दों का राजस्थान, मक्का बाजरे की धानी फसलों से लहलहाता राजस्थान, कांदा, लहसून की चटनी सा चटपटा राजस्थान, केर–सांगरी, आचारों की महक से महकता राजस्थान, चंबल, बनास, माही, लुणी से हराभरा राजस्थान, मीरा, अजमल, दादू, पीपा और रैदास की संत वाणी से पावन राजस्थान, ढोला–मारू, महेंद्र–मूमल की प्रेम कहानियों का प्रेमिल राजस्थान, भाट चारण, भवाई, तेरताली, कालबेलियों, लंगा–माँगणहारों का राजस्थान, भील, मीणा, सांसी, गरासियों का राजस्थान, पीथल, पन्ना, भामाशाह सरीखे स्वामीभक्तों की भूमि राजस्थान, लालपीले हरे नीले चटखिले रंगों से बणी ठनी सा कैनवास पर उतरता राजस्थान,
- कुरजां, गोडावण के मन को लुभाने वाला राजस्थान, बबुल, बरेडी, खेजड़ी से हरा राजस्थान, दुर्ग–किले, तालाब–बावड़ियों, मठ–मंदिरों के अनूठे शिल्प से गढ़ा राजस्थान।
- गरिमामय राजस्थान का भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, प्राकृर्तिक वैविध्य देखते ही बनता हैं जिसे देखने के लिए विश्व के सभी देशों के पर्यटक यहाँ निरन्तर आते है।
- राजस्थान जहाँ एक और विश्व की प्राचीनतम पर्वत श्रंखला अरावली से हराभरा है तो दूसरी और टेथिस सागर के अवशेषों को समेटे हुए विराट मरूस्थल के साम्राज्य से घिरा हैं, उतरी भाग कलात्मक और वैभवशाली शिल्प से गढ़ी हवेलियों, और लोक गीतों व नृत्यों से सजा है तो सुदूर दक्षिणी भाग आदिवासियों, पहाड़ों विन्ध्यं कगारों से बना है।
- गणेश्वर–कालीबंगा के पुरातात्विक उत्खनन, हाड़ौती के प्राचीन गुहा–चित्रों व शैलाश्रयों और नगरी व आहड़ की सभ्यता ने यह तो सिद्ध कर दिया है कि राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत मोहनजोदड़ों और सिंधु घाटी सभ्यता से कम महत्वपूर्ण नहीं है। यहां की लोक संस्कृति आज भी लोक–जीवन की धड़कन है।
- राजस्थान की लोक संस्कृति व परम्पराओं का अध्ययन करने के लिए हम इसे अलग–अलग भागों में बांट सकते है।

सामाजिक संस्थाएं और सामाजिक जीवनः

- मनुष्य सामाजिक प्राणी है तो समाज का होना अवश्यम्भावी है और संस्कृति समाज की आत्मा है। राजस्थान में प्रागैतिहासिक काल से ही सामाजिक संस्थाओं का अस्तित्व रहा है प्रारम्भ में इनका स्वरूप जटिल नही था कालान्तर में ये जटिल होती गईं। वर्तमान में इन सामाजिक संस्थाओं का रूप देहाती, कस्बाई, शहरी, आदिवासी, धार्मिक, जातिय ढाँचों में भिन्न भिन्न देखा जा सकता है।
- शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार ने इनकी जटिलताओं को कुछ हद तक कम किया है।
- वर्ण–व्यवस्था, जाति–व्यवस्था, संयुक्त परिवार, सामाजिक संस्कार आदि अलग–अलग धर्म, जाति, स्थान के अनुसार अलग–अलग हैं।
- वर्ण व्यवस्था जो पहले कर्म प्रधान थी अब जन्मप्रधान हो चुकी हैं। डॉ गोपीनाथ शर्मा के अनुसार ''व्यवसायिक समूहों के विकास, अंतर्जातीय विवाहों, विदेशियों के आगमन के कारण समाज में जटिलताएं बढ़

गई जिसके फलस्वरूप अब समाज का ढांचा वर्णों पर अवलंबित नही रहा, बल्कि जन्म, वंश, व्यवसाय तथा वर्ग–अधिकारों पर आधारित विभिन्न जातियों व उपजातियों पर अवलंबित हो गया है। जाति बंधन, जाति पंचायत का चलन कम होने की बजाए बढ़ा है किंतु इनका प्रभाव शहरों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है।

- राजस्थान में शिल्पी, याचक, लोकगीत व नृत्यों से संबंध जातियां व समुदाय अपना विशेष महत्व रखते है जैसे भाट, चारण, ढाढ़ी ढोली, मिरासी, लंगे–माँगनिहार, कालबेलिया, कामड़ (तेरताली) आदि ये लोक जीवन के साथ लोक कलाओं का प्रतिनिधित्व करते है।
- संयुक्त परिवार प्रथा भी अब ग्रामीण क्षेत्रों में ही ज्यादा देखने को मिलती हैं, सयुंक्त परिवार व्यक्ति को सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक आधार देने में तो समर्थ है किंतु इन्होंने पारिवारिक विवादों और महिलाओं की दुर्दशा को बढ़ाया है। सभी संयुक्त परिवार पितृ सत्तात्मक होते हैं जहाँ आज भी स्त्रियों को व घर के छोटों और अविवाहित सदस्यों को आत्मनिर्णय का अधिकार नहीं होता हैं। सामाजिक संस्कारों के माध्यम से मनुष्य के सामाजिक जीवन को अनुशासित करने का प्रयास किया गया है लेकिन इनमें भी समय के साथ शिथिलता आई हैं विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में इनका बंधन बहुत कम हो गया है।
- वैवाहिक संस्कार ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी जटिल और खचीले हैं किन्तु रीति–रिवाज, लोक–गीतों, नृत्यों, वेशभूषा की दृष्टि से आज भी समृद्ध हैं और वास्तविक लोक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

रीति–रिवाज, प्रथाएँ, वेशभूषा

- सांस्कृतिक विविधता को समेटे हुए राजस्थान में रीति–रिवाजों, परम्पराओं, रंगीन वेशभूषाओं, आभूषणों की समृद्धता देखने को मिलती है।
- जन्म से मरण तक अनेकों संस्कार हैं जिनका ग्रामीण क्षेत्रों में तो आज भी कठोरता से पालन होता है किन्तु शहरी क्षेत्रों में बढ़ती व्यवस्ता के कारण इनमें बहुत ढ़िलाई आई है। कुछ जन्म संस्कारों जैसेः आठवासा, कुआ पूजन, पनघट पूजन, कुछ विवाह संस्कारों, जैसेः कुकम–पत्रिका, बान बैठना, बरी–पाडला, बिन्दोली, मोड़ बांधना, गौना, बढ़ार, कुछ दुख शोक संस्कारों जैसे बैकुंठी, दंडवत, आधेटा, सांतरवाड़ा, मोसेर आदि अब शहरी क्षेत्रों में कम देखने को मिलते हैं इनके इतर आडम्बरों और दिखावों में बढ़ोतरी भी हुई है। जनेऊ प्रथा, सती प्रथा, डावरिया आदि लगभग बंद हो गई हैं जबकि बाल विवाह, पर्दा प्रथा, नाता प्रथा, गोद प्रथा में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ है विधवा विवाह के प्रति आज भी संकीर्णता है।
- वेशभूषा की दृष्टि से राजस्थान की संस्कृति बहुत रंगीन और समृद्ध है। रंगीन व चटकीले रंगों का अधिक उपयोग होता हैं। एक विशेष बात ये है कि राजस्थान की वेशभूषा तीज, त्यौहारों, ऋतुओं, स्थानों, जातियों व समुदायों के अनुसार वैविध्य रखती हैं। महिलाओं की वेशभुषाएँ जितनी रंगीली चटकीली हैं उतनी ही पुरूषों की भी हैं। पुरूषों में पाग, अंगरखी, बिरजस, धोती, अचकन आदि परिधान पहने जाते हैं जबकि स्त्रियों में घाघरा–चोली, कुर्ती–कांचली, पोमचा, लहरिया, बंधेज की चुनरी, पोशाक, ओढ़नी पहने जाते हैं जो उस क्षेत्र विशेष का प्रतीक होते है।
- राजस्थानी रीति–रिवाजों ने पर्यटन को भी आकर्षित किया है, इसके साथ ही वेशभूषा के संदर्भ में आधुनिकता आई हैं और ये अन्तर्राष्ट्रीय फैशन का प्रतीक भी बनने लगे हैं।

- राजस्थान की वेशभुषाएँ और आभूषण अंतर्राष्ट्रीय जगत में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं और विदेशी आय का प्रमुख स्त्रोत भी बन गए हैं।
- यहाँ के लाख, कुदन, गोटा पत्ती, मुकेश का काम, स्टोन के आभूषण विशेष पहचान रखते हैं।

लोक संस्कृति और आर्थिक जीवनः

- राजस्थान कृषि प्रधान राज्य है लेकिन यहाँ की अधिकांश नदियां मौसमी नदियां है, सिंचाई के साधनों का अभाव, रेतीले टीले, बंजर व लवणयुक्त भूमि के कारण यहॉ का जनजीवन वर्ष पर्यन्त खेती पर निर्भर नही रह सकता इसलिए हस्तशिल्प और हस्तकलाओं का भरपूर विकास हुआ है बल्कि इनके आधार पर जातियों और समुदायों का विकास हुआ है जैसेः मूर्तिकार, मनिहार (लखारा), सुनार, सिकलीगर (लुहार), पटवा, ठठेरा–कांसा, कुम्हार, चितारा (लकड़ी व दीवार पर चित्रकारी), बंधारा (पगड़ियां व ओढ़नी छापने वाले), गांच्छा, खाती आदि।
- पशु पालन राजस्थान का महत्वपूर्ण व्यवसाय है जो GDP में भी बड़ा योगदान देता है। यहां पशुपालन से संबंधित जातियां भी विकसित हुई हैं जिनमें अहीर, गुर्जर, रेबारी, गायरी जातियां प्रमुख हैं। ऐसे भी भाट–चारण, आदिवासी जातियां, सेवक जातियां, लूटमार करने वाली जातियां आदि। इन सब जातियों के विशिष्ट आर्थिक व्यवसाय हैं इनके साथ ही रीति रिवाज परम्पराएं भी भिन्न–भिन्न हैं जो संस्कृति को रंगीन बनाते हैं।
- राजस्थान के पुश मैले, हस्तशिल्प मैले अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं जो न केवल आय का स्त्रोत उपलब्ध करवातें हैं बल्कि सांस्कृतिक प्रदर्शन भी करते हैं जिनमें लोक गीतों, नृत्यों की झलक भी देखने को मिलती है जिनमें पुष्कर, परबतसर, नागौर, तिलवाड़ा, साचौर के पशुमेले प्रमुख हैं।
- तीज त्यौहारों की विविधता और इन्द्रधनुषी रंग समेटे मेले राजस्थान की रंगीली संस्कृति के खूबसूरत प्रतीक हैं।
- धार्मिक, हस्तशिल्प, सांस्कृतिक, आर्थिक पशुमेले यहाँ की अंतर्राष्ट्रीय पहचान तो हैं ही साथ ही सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व आर्थिक जीवन का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। विविध त्यौहारों पर अलग–अलग मेले एक अलग सी रोनक लाते हैं और जनजीवन में उमंग भर जाते हैं। कैला देवी का लक्खी मेला, जीणमाता का मेला, शीतलाष्टमी का मेला, करणी माता का मेला, माता कुडालिनी का मेला, डिग्गी कल्याण जी का मेला, शिवाड़ का मेला, चारभुजा मेला, तेजाजी का मेला, सवाईमाधोपुर का गणेश मेला, कोलायत जी में कपिल मुनि का मेला, अलवर का भर्तहरि का मेला, रामदेवजी का मेला, गोगाजी का मेला, जाम्भेश्वर का मेला, पाबूजी का मेला, महावीर जी का मेला, केशरिया नाथ जी का मेला, बाणगंगा मेला, अजमेर में ख्याजा साहब का उर्स, बेणेश्वर का मेला आदि अनेक आदिवासी मेले भी हैं जिनका यहाँ के लोक जनजीवन पर गहरा प्रभाव है।
- तीज,गणगौंर, सिंजारा यहाँ के अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त त्यौहार हैं जिन्हें देखने के लिए दूर दूर से पर्यटक आते हैं इनके अतिरिक्त गोगानवमी, बास्योड़ा, बछबारस, उबछट वनसोमवार, हरियाली अमावस्या, मकर सक्रांति आदि त्यौहार हैं व इनके अतिरिक्त अनेक लोक त्यौहार हैं जो आम जीवन में रस घोलते हैं। औरते सजती सँवरती हैं व्रत रखती हैं, गीत गाती हैं नृत्य करती हैं घेवर, फीणी, लड्डू, सतू, चूरमा दाल बाटी, आदि पकवान बनते हैं उल्लासित वातावरण होता है।

- हर त्यौहार के अपने–अपने गीत–नृत्य होते हैं।
- इनके अतिरिक्त सभी धर्मों के उत्सव आन्नदित होकर मनाए जाते हैं।

धर्म व सम्प्रदाय

- समरसता व सामंजस्य की सरलता और सहजता के कारण राजस्थान में सभी धर्म फले फूले हैं गंगा जमुनी तहज़ीब में राजस्थान का विशेष योगदान है। राजपूती और मुगल संस्कृति का सुंदर व मिला जुला रूप देखने को मिलता हैं, जैन धर्म भी यहाँ विशेष रूप से विकसित हुआ है।
- मुख्य धर्मों के साथ ही यहाँ अनेक मतों, सम्प्रदायों की मान्यता हैं।
- अपने परम्परागत स्वरूप को वर्तमान तक सुरक्षित बनाए रखने के लिए राजस्थान विश्व प्रसिद्ध हैं। यहाँ के धार्मिक स्त्रोतों में शैव, वैष्णव, शाक्त, रामभक्ति आदि की प्रधानता रही हैं।
- राजस्थान में कुछ ऐसे व्यक्ति व संत हुए त्याग और आत्मबलिदान से देश व समाज की सेवा की और नैतिक व सात्विक जीवन को अपनाया और बाद में देवत्व को प्राप्त हुए, इनमें गोगा जी, रामदेवजी, तेजाजी, पाबूजी, मल्लीनाथ जी, देवजी, भोमियाजी प्रमुख हैं इन्होंने मानव को विशेष रूप से ग्रामीण जनता को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।
- राजस्थान में कुछ सम्प्रदायों का भी विशेष महत्व है जो सामाजिक व धार्मिक सुधारों के प्रणेता रहे, इन्होंने धार्मिक आडम्बरों, पांखड़ों, सामाजिक रूढ़ियों व कुरीतियों का विरोध किया, हिन्दू–मुस्लिम एकता, सामाजिक समानता, ह्रदय की शुद्धता, पवित्र आचरण, सत्य अहिंसा, परोपकार, प्रकृति प्रेम उपदेश दिया। प्रमुख सम्प्रदायों में दादू–पंथी सम्प्रदाय, विश्नोई पंथ सम्प्रदाय, रामस्नेही सम्प्रदाय, पुष्टिमार्ग, निम्बार्क, राधाबल्लभ, गौड़ीय, रामानुजी व रामानदीं सम्प्रदाय, जसनाथी सम्प्रदाय, दरिया पंथ, नाथ सम्प्रदाय, निरंजनी सम्प्रदाय, आर्य समाज मुख्य हैं।
- इन सभी ने सामाजिक व धार्मिक चेतना जाग्रत करने का कार्य किया और बुरी प्रथाओं से समाज को मुक्त किया।

लोक संत व लोक देवी–देवताः

- लोक देवी–देवताओं से अभिप्राय उन विशेष लोगों से है जिन्होंने मानव के रूप में जन्म लिया और असाधरण व कल्याणकारी जीवन जिया और जनमानस ने उन्हें दैवीय अंश के रूप में स्वीकार किया।
- लोक संतों, देवी–देवताओं का सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने में विशेष योगदान हैं। मध्ययुग में विदेशी आक्रांताओं से राजस्थान की राजनीतिक व्यवस्था गड़बड़ा गई थी, सामाजिक व धार्मिक जीवन भी त्रस्त हो गया था, ऐसे में इन संतों व लोक देवी–देवताओं ने ही नव चेतना और आत्मबल जाग्रत कर संस्कृति की रक्षा की, आज भी समाज में इनकी गहरी मान्यता हैं। इन्होंने समाज के शुद्धिकरण और सुसंगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह की।
- प्रमुख संतो, देवी–देवताओं का उल्लेख हम ऊपर के विश्लेषण में कर चुके हैं।

राजस्थानी चित्रकला

- राजस्थानी चित्र कला बहुत ही सम्पन्न व समृद्ध कला है इसने न केवल राजस्थान को बल्कि भारत देश को भी अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलवाई है। प्रत्येक क्षेत्र की विशिष्ट पहचान होने के कारण यहॉ प्रत्येक क्षेत्र की अपनी एक चित्र शैली विकसित है। यहॉ के चित्रों में राधाकृष्ण, राग–रागनियां, बारहमासा, रामायण, नायक–नायिका, प्रेम श्रृंगार रस, युधों का चित्रण हैं। राजस्थान की शैली अपभ्रंश शैली मानी जाती हैं। इसमें मुगल शैल और अजंता शैली का मिश्रण है, प्राचीनता, कलात्मकता, भड़कीले व चटकीले रंग, स्त्री सौंदर्य, लोक जीवन से निकटता, भाव प्रधानता, समय व देशकाल के अनुरूपता, प्राकर्तिक अनुरूपता इसकी मुख्य विशेषताएं है। यहाँ की प्रचलित शैलियों में मेवाड़ शैली, नाथद्वारा शैली, मारवाड़ शैली, किशनगढ़ शैली, बीकानेर शैली, कोटा शैली, बूंदी शैली, जयपुर शैली, अलवर शैली, उनियारा शैली, अजमेर शैली, डूंगरपुर शैली, देवगढ़ शैली प्रमुख है।
- राजस्थान की लोक चित्र शैलियां यहां के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, प्राकृतिक जीवन को, परम्पराओं, विश्वासों, चिन्तन को अभिव्यक्त करती हैं जिन्हें हम निम्न भागों में वर्गीकृत करते हैंः भित्ति एवं भूमि चित्र, पथवारी, अमूर्त, सांकेतिक व ज्यामितिक अलंकरण (सांझी व मांडवा कला), कपड़े पर निर्मित चित्र जिनमें पटचित्र, पिछवाई, फड़ शामिल हैं, लकड़ी पर निर्मित चित्र– कावड़ व खिलौनें, पक्की मिट्टी पर चित्र, मेहंदी, गोदना आदि।
- चित्रों के अतिरिक्त राजस्थान में मूर्तिकला, काष्ठ कला, मृणमयी कला, मिट्टी की मूर्तिकला भी बहुत विकसित है, रेत पर चित्र बनाने की कला भी विशेष रूप से यही विकसित हुई जिसका श्रेय स्वर्गीय डॉ वीरबाला जी को जाता है।

स्थापत्यकला

- इस कला का संबंध नगर, भवन, दुर्ग, किले, गढ़, देवालय, बांध, स्मारक निर्माण से है।
- ये कला पूरी सभ्यता के विकास की कहानी कहती है। राजस्थान अपने अनूठे शिल्प और वास्तु के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहॉ के प्रत्येक नगर का विशेष वास्तु शिल्प हैं। यहाँ के दूर्ग, किले, बावड़ियां, हवेलियां विशेष पहचान रखते हैं।

लोक–संगीत व सामाजिक जीवनः

- जब हम संगीत की बात करते हैं तो गायन–वादन–नृत्य तीनों कलाओं का उसमें समावेश होता है। लोक संगीत क्षेत्र विशेष के जनजीवन में रचे बसे संगीत को कहते हैं जो वहाँ की प्रचलित भाषा में होता है और उसी क्षेत्र के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेश को दर्शाता है। राजस्थान में शास्त्रीय व लोक संगीत दोनों की ही परम्परा बहुत समृद्ध रही है। शास्त्रीय संगीत को राजघरानों द्वारा बहुत आश्रय दिया गया है। अनेक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखे गए हैं, वही लोक संगीत को आम जन ने सहज कर रखा हैं। शास्त्रीय संगीत का साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है जबकि लोक संगीत चूंकि स्थानीय निवासियों द्वारा सहज के रखा गया इसलिए साहित्य की उपलब्धता कम है और जो भी है वो स्थानीय भाषाओं में ही है और मौखिक है जिसे अब कलमबद्ध किया जाने लगा है। राजस्थानी संगीत गंगा जमूनी तहज़ीब की अनूठी मिसाल है। यहाँ हम राजस्थान के लोक संगीत की बात करेंगे।
- राजस्थान में जहाँ एक और शास्त्रीय संगीत के महत्वपूर्ण घराने विकसित हुए वहीं लोक संगीत भी बड़ी सहजता और सरलता से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता गया और लोक संगीत पर आधारित जातियां फलती फूलती रहीं जिनके जीवन का आधार ही लोक संगीत हैं।

- ये बहुत विशेष बात है कि राजस्थान में लोक संगीत के आधार पर न केवल जातियां विकसित हुई बल्कि पूरे की पूरे गांव, कस्बे विकसित हुए और इन्होंने अपनी और देश की विशेष अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाई। राजस्थान के लोक संगीत का स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाई। राजस्थान के लोक संगीत का स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन में महत्वपूर्ण योगदान हैं।

लोक गीतः

- ''माखन की चोरी छोड़ कनैहिया में समझाऊं तोहे।''
- राजस्थान के लोक संगीत का मुख्य आधार लोकगीत हैं जो सामूहिक रूप से गाय जाते हैं, और उस क्षेत्र विशेष की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजवंश, युद्ध, सांस्कृतिक विकास की झलकी प्रस्तुत करते हैं।
- मीरा, दादू, रैदास आदि संतों की वाणी को चेतावनी गीतों में ढालकर गाया जाता है। राजस्थानी और शास्त्रीय संगीत के मिश्रण से बनी मांड गायकी विश्वविख्यात है।
- महात्मा गाँधी ने कहा था कि ''लोक–गीत आर्यत्तर सभ्यता के वेद हैं।'' राजस्थान लोक गीतों की दृष्टि से समृद्धशाली हैं। लोकगीतों में जनसाधारण का उल्लास, प्रेम, करूणा, दुख झलकता है, इनमें भाषा की तुलना में भाव प्रमुख होते हैं। इनके रचियता कौन हैं ये तो पता नही होता लेकिन मौखिक होने पर भी ये लय के साथ गाये जाते हैं। जिनमें संस्कृति, रहन–सहन, तथा मानवीय भावनाओं का सजीव वर्णन होता हैं। राजस्थान ने लोक गीतों को तीन वर्गों में बांटा गया हैः जनसाधारण के गीत, व्यवसायिक जातियों के गीत, क्षेत्रीय रंग प्रधान गीत।
- जनसाधारण के गीतों में संस्कार, तीज–त्यौहार, ऋतू, देवी–देवताओं व विविध विषयी गीत होते हैं।
- ये सर्वाधिक गायें जाने वाले गीत हैं जो महिलाओं द्वारा समूह में गाय जाते हैं। जच्चा (होलर), माहेरा, बना–बनी, पावणा, परणेत, कामण, बिंदोरी, निकासी, इंडोणी, कांगसियो, गोरबन्द, पणिहारी, घूमर–लूर–झुमारियो, ओळयूँ, काजलियों, कुरजा, घुड़ला, रसिया आदि अनेक गीत हैं इनके अतिरिक्त पौराणिक, प्रकृति आधारित गीत, तीज त्यौहार, लोक देवी–देवता के गीत भी जनसाधारण में बहुतायत से गाय जाते हैं।
- व्यवसायिक जातियों के गीतों में लंगा, माँगनिहार, ढोली, मिरासी, कलावन्त, भाट, राव, जोगी, कामड़, बैरागी, गंधर्व, भोपे, भवाई, राणा, कालबेलिया आदि जातियों के गीत गाए जाते हैं जिनमें मांड, देस, सोरठ, मारू, परज, कालीगंड़ा, जोगिया आसावरी, बिलावल, पीलू खमाज आदि रागों का उपयोग किया जाता हैं।
- क्षेत्रीय रंग प्रधान गीतों में मरूप्रदेश, पर्वतीय क्षेत्र, मैदानी क्षेत्र, आदिवासियों के गीत प्रमुख हैं।

लोक–वाद्य

- राजस्थान के लोक संगीत में यहाँ के परिवेश, परिस्थितियों व भावों के अनुसार लोक वाद्धयों का उपयोग होता है, यहाँ के लोक वाद्य भी जनजीवन का महत्वपूर्ण अंश है और वाद्य भी जनजीवन का महत्वपूर्ण अंश है और वाद्कों ने भी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है।
- प्रमुख वाद्य यंत्रों में इस प्रकार है।

- तत–तार वाले वाद्य यंत्र जिनमें इकतारा, दोतारा, चौतारा, जंतर, रवाज़, तंदुरो, निशान, रावणहत्था, चिंकारा, सारंगी, कमायचा, भपंग प्रमुख हैं।
- घन–धातु से निर्मित वाद्य यंत्र जैसेः डांडिया, घण्टा, थाली, घंटी, झांझ, तासली, मंजीरा, चिपिया, खड़ताल, चूड़ियां, लेजिम, घोडलियो, झालर, घुंधरू, श्रीमंडल, टाली प्रमुख हैं।
- सुषिर, फूंक से बजने वाले यंत्र जिनमें अलगोजा, बंसी, मोरचंग, पेली, तोटो, नड़, सतारा, पुंगी, मुरली, मशक, शंख सिंगी, तुरही, शहनाई, करणा, नागफणी, बांकिया मुख्य हैं।
- अवनद्ध– चमड़े आदि से ढके वाद्य यंत्र जिनमें चंग, डफ, खंजरी, ढोलक, मृदंग, ढोल, नगाड़ा, नौबत, घेरा, मादल, नगारा, निशान, ढाक, डमरू, घोंसा, दमामा, कुंडी, तसा, पाबूजी के माटे, मटकी आदि प्रमुख है।

लोक–नृत्यः

- लोक गीतों पर लोक वाद्यों के संग उमंग और उल्लासित होकर थिरकना ही लोक–नृत्य है। राजस्थान के लोक–नृत्यों ने विश्व पटल पर अमिट छाप छोड़ी है।
- यहाँ के लोकनृत्यों में लय–ताल–सुर–गीत का अनोखा तालमेल देखने को मिलता है।
- आज भी भील, मीणा, नट, सांसी, कंजर, बंजारा, कामड़, कालबेलिया, गिरासिया, डोली, सरगर, बादीया, भोपा, राव, मिरासी आदि जातियां लोकनृत्यों की सुंदर परम्पराओं व किस्सों को जीवित और सुरक्षित रखे हुए हैं।
- लोक गीतों के आधार पर ही लोकनृत्यों का भी जनजीवन, क्षेत्र, व्यवसायिक जातियों के आधार पर वर्गीकरण किया गया है।
- गैर, गींदड़, चंग कच्ची घोड़ी, डांडिया, ढोल नृत्य, अग्नि नृत्य, बम या बमरसिया नृत्य, घुड़ला, गरबा, घूमर, गवरी, नेजा, राई, तेरताली, भवाई, कालबेलिया, चरी नृत्य, पनिहारिन, वालर, शंकरिया, झूमर आदि यहाँ के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नृत्य हैं जिनके आधार पर पूरे की पूरे गांव व जातियां बसी हैं।

लोक–नाट्य व सामाजिक जीवनः

- राजस्थान में लोक नाट्यों की बहुत प्राचीन और समृद्ध परम्परा रही है।
- लोक नाट्यों में सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक गाथाओं, दशाओं व व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है। ये किसी एक काल में लिखे नही गए बल्कि इनकी परम्परागत गाथाएं, संवाद, गीत, इनकों करने वाले कलाकारों को कंठस्थ रहते हैं। ये किसी विशेष जाति से संबंध नही होते। वीर रस, धार्मिक रास, हास्य, व्यंग की प्रधानता लिए होते हैं। ख्याल, रम्मत, तमाशा, नौटंकी, लीला, भवाई, गवरी, फड़, स्वांग गंधर्व नाट्य, रास लीला, दंगली नाट्य, मंचीय नाट्य, नुक्कड़ नाट्य, बैटकी नाट्य, सवारी नाट्य आदि प्रमुख लोक नाट्य हैं। राजस्थान के लोक नाट्य अपने आप में बहुत विस्तृत विषय है जिस पर पृथक से गहन अध्ययन किया जा सकता है। इनमें लोक जीवन की बहुत स्पष्ट और रोचक झलक मिलती है।
- राजस्थानी लोक संस्कृति बहुत विस्तृत विषय हैः लोक–भाषा, बोलियां, कहावतें, मुहावरे, किवदंतियां, विश्वास, लोक–साहित्य बहुत सम्पन्न और अकूत हैं जिनमें यहां के लोक जीवन की बहुत सी जानकारियां हैं। सभी पर एक साथ चर्चा करना सम्भव नही है।

- किन्तु ये सत्य है कि लोक संस्कृति को समझे बिना हम सामाजिक व्यवस्था को नही सकते, अर्थात लोक संस्कृति को सामाजिक जीवन से पृथक नही किया जा सकता है।

साहित्य समीक्षाः

- साहित्य समीक्षा में उन विद्धवानों व कलाकारों के विचार प्रस्तुत कर रही हूँ जो लोक–संस्कृति के प्रसार–प्रचार व सरंक्षण के लिए कार्य कर रहे हैं।
- सुप्रसिद्ध साहित्यकार व दूरदर्शन के पूर्व निर्देशक श्री नंद भारद्वाज का कहना है कि संस्कृति अभी विकास की प्रक्रिया से गुजर रही है। और ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में अलग–अलग रूप में देखी जा सकती हैं, ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी लोक संस्कृति जींवत है लेकिन शहरों में लुप्त सी होती जा रही हैं, संस्कृति का विकास तब तक अधूरा है जब तक कि पितृसत्तात्मक समाज में सित्रियों कों आत्मनिर्णय का अधिकार नहीं मिलता, सर्व शिक्षा का अभाव संस्कृति के मार्ग में बड़ी बाधा हैं, इसके अतिरिक्त राजनीतिक चेतना का अभाव भी संस्कृति की विकास प्रक्रिया में बाधक हैं।
- वरिष्ठ रंगकर्मी व क्लाविज श्री ईश्वर दत्त माथुर का कहना है कि राजस्थान के संदर्भ यह जग जाहिर है कि यहाँ की लोक संस्कृति समृद्धि ही नही प्रासंगिक भी है। लोक संस्कृति अपने आप में गीत संगीत, रीति–रिवाज, मान्यताएँ, परंपराएँ, आध्यात्मिक चेतना, पारिवारिक संस्कार, भाषा, रहन सहन, चाल–चलन, पहनावा या वेशभूषा, ऋतु अनुकूल खानपान तथा सामाजिक लोक व्यवहार की सूक्ष्म बातों सहित वह कुछ, जो मानव जीवन के सर्वांगीण विकास और जीवनचर्या के लिए जरूरी हैं, को अपने आप में समेट हुए हैं।
- जाजम फाउंडेशन के संस्थापक श्री विनोद जोशी जी का कहना है कि सामाजिक जीवन और लोक संस्कृति के बीच बढ़ती दूरी का मुख्य कारण हमारी शिक्षा पद्धति में लोक संस्कृति व परम्पराओं की उपेक्षा है, प्राइमरी शिक्षा में स्थानीय व क्षेत्रीय भाषा, इतिहास व संस्कृति की जानकारी होनी चाहिए और सेकेंडरी शिक्षा तक आते आते राजस्थान के सातों सांस्कृतिक संभागों की जानकारी होनी चाहिए।
- वशिष्ठ रंगकर्मी व संगीतकार अनिल सक्सेना, 'अन्नी' जी की राय है कि पूरा सांस्कृतिक वैभव को उसके मूल रूप में संरक्षित किया जाना चाहिए और लोक संस्कृति के वाहक लोक कलाकारों के आर्थिक उन्नयन के लिए मजबूत प्रयास होने चाहिए, सरकारी नीतियों में लोक संस्कृति व कलाकारों को स्थान मिलना चाहिए।
- अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त सुप्रसिद्ध माँगनिहार गायक गाज़ी खान कहते है कि डिज़िटल माध्यम से लोक संस्कृति, कलाओं व परम्पराओं को संकलित और संरक्षित किया जाए और इनका सही ज्ञान लोगों तक पहुँचाया जाय, ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा और चिकित्सा का विकास हो ताकि कलाकारों को शिक्षा व रोजी रोटी के लिए अपना गाँव व अपनी कला को छोड़ना ना पड़े।
- कालबेलिया नृत्यांगना खाटू सपेरा का तर्क है कि लोक कलाकारों के लिए सरकारी योजनाएं न के बराबर हैं इनके भरोसे हम कलाकार आजीविका नहीं चला सकते जब गांवों से शहरी क्षेत्रों की ओर रोजी की तलाश में कलाकार पलायन करेगा तो अपनी कला से स्वतः ही दूर हो जाएगा जिसका प्रभाव सामाजिक जीवन पर पड़ना अवश्यम्भावी है, लेकिन जीवन में कुछ पाना है तो कड़ी मेहनत भी हमें ही करनी होगी।
- तेरताली की अंतर्राष्ट्रीय नृत्यांगना गंगा देवी कामड़ का कहना है कि लोक कला व संस्कृति के बिना तो सामाजिक जीवन की कल्पना ही असंभव है लेकिन लोक जीवन के लिए आर्थिक आधार अच्छा होना चाहिए।

- अंतर्राष्ट्रीय चित्रकार बजरंग सुथार मोमासर मानते हैं सबसे महत्वपूर्ण पक्ष आजीविका का ही नही है बल्कि लोक जीवन और लोक कलाकारों की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के भी है तभी लोक संस्कृति और लोक जीवन में जुड़ाव रह सकेगा अन्यथा पलायनवादी प्रवर्तियां बढ़ेंगी।
- उपर्युक्त सभी विचारों से सहमत हुए बिना नही रह सकती, सभी ने शिक्षा व आर्थिक पक्ष पर जोर देते हुए ये स्वीकार किया है कि वर्तमान में लोक संस्कृति की सामाजिक जीवन में प्रासांगिकता से मुकरा नहीं जा सकता किन्तु साथ ही राजनैतिक व सामाजिक चेतना में सुधार होना अभी बाकी हैं जो लोक संस्कृति की अक्षुणता के लिए अनिवार्य हैं।

अनुसंधान विधिः

- शोध के लिए प्रमुख साहित्यकारों व कलाविज्ञो के लेखों, किताबों व वक्तव्यो, पत्र–पत्रिकाओं को आधार बनाने के साथ ही लोक कलाकारों को साक्षात्कार व परामर्श भी लिया गया है।

महत्वः

- लोक संस्कृति व इसकी सामाजिक प्रासांगिकता विषय के अध्ययन के उदेश्य ही इसके महत्व को भी दर्शातें हैं।
- राजस्थानी लोक–संस्कृति के प्रति जागरूकता व रूचि उत्पन्न करना।
- लोक कलाओं व कलाकारों का संरक्षण करना।
- कलाकारों व लोक जीवन की आत्मनिर्भरता व स्वावलम्बन के अवसर तलाशना
- गांवों से शहरों की और पलायनवादी प्रवर्तियां को रोकना।

निष्कर्ष :

- लोक–संस्कृति का अपना रचना संसार है। काल, परिस्थिति और समय के अनुकूल लोक–संस्कृति अपनी रचना करती हैं, जिसे समाज स्वीकार भी करता है और वही परंपराओं और मान्यताओं को स्वरूप भी बनते है। लोक संस्कृति, संस्कारों और परम्पराओं के मूल्यों की रक्षा लोक जीवन स्वयं करता है और वही उसकी प्रासंगिकता को अक्षुण्य भी बनाए रखे हैं।
- यद्यपि लोक संस्कृति की परम्पराओं, मान्यताओं और उसकी प्रासंगिकता पर चर्चा करना अब गोष्ठीबाज लोगों के लिए बहस का मुद्दा बन गया है। लेकिन बिना किसी नतीजे पर पहुंचे, ऐसे लोग महज अपना व दूसरों का समय ही जाया करते हैं, क्योंकि संस्कृति और संस्कार की जड़े हमारे सामाजिक जीवन में गहरी बैठी हुई है। जिससे हम सभी अंतमंन से बंधे हुए हैं। लोक परंपराएं और मान्यताएं हमारे सामाजिक जीवन की प्राण वायु के समान है।
- राजस्थान की लोक संस्कृति की प्रासंगिकता के संदर्भ में मेरा निवेदन है कि लोक संस्कृति को आत्मसात कर दैनिक जीवन की बारीकियों का अध्ययन करना होगा। वर्तमान समय की समस्याओं और चुनौतियों का हल भी परंपराओं और मान्यताओं में ही निहित है। इसलिए इनकी प्रासंगिकता पर प्रश्न चिंह्न लगाना अपनी जड़ों पर प्रहार करने जैसा है।

- पर्यावरण संरक्षण की बात करें तो पेड़–पौधों और वन्यजीव संरक्षण हमारे समाज की प्राथमिकता रही हैं। बड़अमावस्या, पीपल पून्यू, नागपंचमी, बछबारस, तेजा दशमी सहित अनेक ऐसे लोक त्यौहार हमें जीव रक्षण की शिक्षा देते हैं। राजस्थान में खेजड़ली का उदाहरण वन्य संरक्षण का ऐतिहासिक उदाहरण है।
- वार त्यौहार और खानपान के अलावा घर के रीति–रिवाज और अतिथियों की आव भगत की भी अनूठी परंपरा हमारे समाज में है।
- संस्कृति और संस्कारों में स्वच्छता भी सदैव सर्वोपरि रही हैं। अपने से तीन पीढ़ी पहले की पारिवारिक संरचना और रहन–सहन के तौर तरीकों पर दृष्टिघात करें तो पाएंगे कि बिना हाथ पांव धोये रसोई में घुसना वर्जित था। परंडे का साफ रखा जाता था। घंटी से पानी लिया जाता था। बोतल संस्कृति ने सब कुछ तबाह कर दिया। घर के भीतर जूते चप्पल पहनकर आना सर्वेथा वर्जित था। अपनी बीमारियों का कारण हम खुद है। पुराना रहन सहन, खानपान वैज्ञानिक और मर्यादा अनुकूल व अनुशासित था आज सर्वथा विपरित है तो परिणाम भी साफ दिखाई दे रहे हैं।
- पुराना रहन–सहन सर्वंथा वैज्ञानिक और मर्यादा अनुकूल था।
- कहने को बहुत कुछ है, लेकिन ने इस बात की प्रबल पक्षधर हूं कि राजस्थान की समृद्ध लोक संस्कृति, संस्कार, मान्यताएं और परंपराए आज भी सर्वथा प्रासांगिक हैं। जरूरत उन्हें अपनाने की है। बतौर फैशन या लोक दिखावे के कारण हम अपनी परंपराओं को नहीं अपनाएं बल्कि जीवन मूल्यों के उन सार्थक तत्वों को समझकर, उनकी वैज्ञानिक और तार्किक महत्ता को समझकर अपनाएं तो हम सुखमय जीवन की और अग्रसर होंगे।

***लेखिका, निर्देशिका**
संस्था कला मंजर
जयपुर (राज.)

संदर्भ सूची

- राजस्थान की सांस्कृति परम्परा, (डॉ. जयसिंह नीरज, डॉ. भगवती लाल शर्मा)
- समसामयिक राजस्थान (डॉ. एल.आर.भल्ला)
- मधुमती (राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर)
- राजस्थान एटलस (एस. आर.ऑजणा, एम.एस.कोटड़ा, बी.आर,ऑजणा, दीपा रतनू)
- लेख (डॉ. गोपीनाथ शर्मा, डॉ. विजय कुमार, डॉ. कलानाथ शास्त्री)
- परमार्श (वरिष्ठ साहित्यकार श्री नंद भारद्वाज, वरिष्ठ रंगकर्मी व कलाविज्ञ श्री ईश्वरदत्त माथुर), सांस्कृतिक विशेषज्ञ श्री विनोद जोशी, वरिष्ठ रंगकर्मी व संगीतकार अनिल सक्सेना 'अन्नी')
- साक्षात्कार (गाज़ी खान, खाटू सपेरा, गंगा देवी कामड़, बजरंग सुथार मोमासर)